वो तुम ही तो हो माँ

वो तुम ही हो
जो करती हो इन्तजार
छत पर ।
आती जाती बसों को
देखते हुए,
उतरते लोगों में,
परखते हुए मेरी चाल ।
उतर आती हो नीचे,
दरवाजे पर मुस्कराते हुए
और ले जाती हो
आँगन में,
परोस कर थाली
पूछती हो मन पसन्द
सब्जी का स्वाद ।
वो तुम ही तो हो
जो लाँघ कर सारी मर्यादा ।
खड़ी हो जाती थी ।
कार्यालय की सीढ़ियों पर,
लिये टिफिन का डिब्बा
और खबर कर बुलाती
थी मुझे ।
इसके पहले कि मैं कुछ कहूँ,
लौट पड़ती थी तुम ।
वो तुम ही तो थी
जो बुखार से तपते
बदन को लिटाये,
उढ़ा कर चादर,
बाँध कर कान।
बबुआ सा
सहलाती थी धीरे–धीरे ।
प्रार्थनाओं के साथ–साथ,
बिना घबराये
और करती रहती थी,
अपने शेष काम भी ।
मेरे ही आस–पास
वो तुम ही तो थीं
जो टूटने पर मनोबल
बन जाती थी साहस,

पकड़ कर हाथ
चलती थी कदम दर कदम ।
हँसाती थी मुझे,
सुना कर कोई अनूठी बात ।
जवानी में भी
उतार लेती थी नजर,
छिपा कर अपनी
सारी पीड़ाएँ,
चाहती थी रखना
खुश मुझे ।
वो तुम ही तो थी
जो घर से निकलते समय,
रख देती जेब में धीरे से,
कुछ खाने की चीज ।
पूछती थी चश्मा, रूमाल,
पैन, मोबाइल, रूपया,
ताकि मैं हो सकूँ सफल
अपनी यात्रा में ।
सोचती हूँ,
कहाँ–कहाँ नहीं निभाया है,
तुमने मेरा साथ ।
सदा ही बढ़ाया है,
मेरे लिये अपना हाथ ।
जिन्दगी के हर पल पर
हस्ताक्षर हैं तुम्हारे।
मेरी पहचान,
मेरा पर्याय,
हो तुम ।
इस दुनिया की,
सबसे बढ़िया दोस्त ।
जिसे मैं,
हर साँस में,
कह सकूँ अपना ।
वो तुम ही तो हो ।।।।।

शुभदा पाण्डेय
असम विश्वविद्यालय,
सिलचर – 788011
(M) - 09435376047